International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(3): 112-118
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 18-05-2026
Accepted: 13-06-2026
Publish : 15-06-2026

डॉ. हेमन्त कुमार
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
मानवविज्ञान विभाग,
शासकीय जे. यो. छत्तीसगढ़
कॉलेज,रायपुर (छ.ग.)

Correspondence:
डॉ. हेमन्त कुमार
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
मानवविज्ञान विभाग,
शासकीय जे. यो. छत्तीसगढ़
कॉलेज,रायपुर (छ.ग.)

"नट" घुमंतू जाति समूह की एक सहभागी समकालीन अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष संदर्भ में)

डॉ. हेमन्त कुमार

सारांश -

प्रस्तुत आलेख "छत्तीसगढ़ के घुमंतू जाति समूह "नट" पर केन्द्रित है। अध्ययन का प्रमुख उददेश्य घुमंतू "नट" जाति समूह के खेल-तमाशा पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, भाषायी, वस्त्र-आभूषण का अध्ययन एवं "नट" जाति समूह का नृजातिवृतांतात्मक चित्रण सह-संहिताकरण करना रहा है। नृजाति अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दो संभाग रायपुर एवं बिलासपुर का चयन उददेश्यमूलक निदर्शन पद्वति से (पुरुष 105, महिला 105) किया गया है। "नट" हिन्दी शब्द है जो न+ट दो शब्दो से मिलकर बना है, जिनका अर्थ नृत्य, नाटक, करतब, अथवा अभिनय करना है। "नट" को छत्तीसगढ़ी शब्द में "डंगचगहा" कहते हैं जो मुख्यता डंग+चगहा दो शब्दो से मिलकर बना है। जिसमें "डंग" शब्द का अर्थ "बाँस" तथा "चगहा" शब्द का अर्थ "चढ़ना" होता है। इस प्रकार "नट" (डंगचगहा) नाम का वास्ताविक अर्थ बाँस पर चढ़कर खेल दिखाना या "दो बाँस पर रस्सी के संहारे चलना" है। "नट" अपने समुदाय को राजपूतों से जोड़ते हुए अपने आप को एक प्रकार से "नट राजपूत" कहते हैं। भाषायी द्रिष्त से "नट" अपने भाषा-बोली को गुजराती भाषा से संदर्भित बताते हैं। अर्थात "नट" जाति समुदाय आपसी बातचीत के लिए "नट" भाषा-बोली का उपयोग करते हैं। गुजराती भाषा का लिखित प्रमाण है, जबकि "नट" भाषा-बोली का कोई लिखित प्रमाण नहीं है। "नटों" में समगोत्र विवाह का प्रचनल नहीं है। "नटों" में अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक रूढ़ीवादी होने के साथ-साथ इनमें पुनर्जन्म की मान्यताओं पर विश्वास देखा गया है। "नट" शारीरिक बनावट की दृष्टि से द्रविड़ियन समूह के अन्तर्गत प्रदर्शित होता है।

कुंजीशब्द :- नट, घुमंतू जाति, नृजाति समूह, छत्तीसगढ़ ।

परिचय:- घुमंतू/अर्ध-घुमंतू "नट" जाति समूह भारत में पाये जाने वाले घुमंतू, अर्ध-घुमंतू आपराधिक, खानाबदोश, भ्रमण करने वाले जाति-जनजाति के रूप में जाना जाता है। तो वहीं छत्तीसगढ़ राज्य में "नट" जाति समूह को "डंगचगहा" के नाम से जाना जाता है। "नट" जाति समूह भारत के विभिन्न राज्यों में क्रमशः मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान इत्यदि राज्यों में निवास करती है। "नट" जाति समूह को भारत में क्षेत्र अनुसार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग का दर्जा प्राप्त है। MOSJE (2017)[1], The Gazette of India (1956)[2] "डंगचगहा" समूह छत्तीसगढ़ राज्य में प्रायः सभी जिलों में निवासरत है। "नट" जाति समूह का जीवन-यापन अभी भी लगभग पूर्णरूप से घूम-घूमकर कलाबाजी, खेल-तमाशा दिखाना है। नृजाति समाज में बहुते कम ही लोगों के पास खेती के लिए जमीन है। अर्थात् "नट" समाज में लोगों के पास खेती के लिए जमीन न होना, अशिक्षा, सामाजिक रूढीवादी पंरपंरा एवं लोगों का "नट" जाति के प्रति विचार को हम घुमन्तू जीवन-यापन के कारक के रूप में देख सकते हैं। "नट" जाति में अभी भी कुछ परिवार खेल-तमाशा, करतब दिखाने के लिए दूसरे प्रदेशों को पलायन करते है या जाते है और पुनः कुछ माह के बाद वापस

अपने निवास स्थान (गांव) पर लौट आते है। नृजाति समूह "नट" को कुछ वर्षों पूर्व पूर्ण रूप से घुमंतू जाति-जनजाति के रूप में पहचाने जाते थे, लेकिन वर्तमान समय में "नट" जाति समूह को छत्तीसगढ़ राज्य में अर्ध-घुमंतू जाति के रूप में जाना जाता है। सामाजिक जनगणना (2014)[3], भारत की जनगणना (2011)[4] के अनुसार नट, कालबेलिया, सपेरा, नवदिगार एवं कुबुतर की कुल जनसंख्या 4,995 थी। NCDNST (2008)[5] के एक अनुमान के आधार पर दक्षिण एशिया में विश्व के सर्वाधिक घुमंतू/अर्ध-घुमंतू जाति-जनजाति नृजाति समूह निवास करती है। जिसमें से लगभग 500 प्रकार के विमुक्त घुमंतू/अर्ध-घुमंतू जाति-जनजाति समूह केवल भारत में निवासरत है, जो भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 7 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व दर्शाता है। सुरेश (2021)[6] के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में "नट" (डंगचगहा) जाति समूह की कुल जनसंख्या 97859 है। जिसमें से 50996 पुरूष, 46885 महिला है। जिलानुसार इनकी जनसंख्या जैसे- रायपुर जिला में 9743, जांजगीर-चांपा 9638, मुंगेली 8528, बिलासपुर 7857, बेमेतरा 8619, कबीरधाम 9201, नांदगांव 4819, दुर्ग 9437, महासमुंद 4664, बलौदाबाजार 8395, रायगढ़ 4592, धमतरी 5584, बालौद 6786 लोग लगभग 13 जिला में विमुक्त घुमंतू-अर्ध-घुमंतू जाति "नट" गांव एवं शहरों में निवास करती है। भारत देश के संदर्भ में देखे तो जनगणना (2011)[7] के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में 4993, मध्यप्रदेश 111465, उत्तरप्रदेश 214344, दिल्ली 5916, पश्चिम बंगाल 1119, बिहार 58819, हरियाणा 15447, हिमाचल प्रदेश 313, पंजाब 3407, त्रिपुरा 1643, राजस्थान 65904 उत्तराखण्ड 1177, झारखंड 1286 एवं चडीगढ़ में 225 लोग प्रमुख रूप से निवासरत है। NCDNST (2008)[8] रिर्पोट के अनुसार 10 से 15 करोड़ विमुक्त घुमन्तु/अर्ध-घुमंतू जाति-जनजाति भारत में निवासरत है। जिसका प्रमुख व्यवसाय पांरपरिक खेल-तमाशा, करतब, कलाबाज एवं भिच्छावृत्ति है। आधुनिकता के दौर में अब लोग खेल-तमाशा, करतब को देखना कम कर दिया है या यू कहें कि देखना पंसद नहीं करते हैं। लेकिन अब नृजाति समूह लोगों को अपने खेल-तमाशा, करतब की ओर आकर्षित (खींचने) करने के लिए अपने पांरपरिक खेल-तमाशा, करतब दिखाने के तौर-तरिकों में बदलाव किया (लाया) है या यू कहें कि आधुनिकता के प्रभाव के कारण इनमें बदलाव/परिवर्तन हो गया है। अब वर्तमान समय में पांरपरिक लोक संगीत, नृत्य, ढोल नगाड़ा के स्थान पर साऊड़ बॉक्स के द्वारा नवीन गीत संगीत का उपयोग करते हुये विभिन्न प्रकार के खेल-तमाशा, करतब के साथ-साथ कुछ जड़ी-बुटी, ताबीज बेचने के काम भी करने लगा है। तो वहीं कुछ "नट" घुमंतू/अर्ध-घुमंतू जाति समूह स्थायी बसाहट बसते हुये वर्तमान समय में खेल-तमाशा, करतब के साथ-साथ कृषि-मजदूरी भी करने लगा है। स्थायी बसाहट के कारण जहाँ घुमंतू जाति समूह का जीवन स्तर ऊँचा उठा है तो वहीं अपने मूल पांरपरिक व्यवसाय खेल-तमाशा, करतब को वर्तमान समय में युवावर्ग करने से कतराने लगा है। क्योंकि गांवों में स्थायी बसाहट बसने के कारण दूसरे जाति/जनजातियों के बच्चों को देखा कर या देखा सीखी में उनके जैसे व्यवहार, पहनावा, खान-पान, रहन-सहन तथा कुछ बच्चें अब स्कूल, कॉलेज भी जाने लगा है। पढ़े लिखे बच्चों के मंन में संकोच खेल के प्रति आने के कारण खेल-तमाशा, करतब नही दिखाना चाहते तो वही खेल-तमाशा, करतब के दौरान पहने जाने वाला कपड़ा एवं चेहरा में लगाये जाने वाला मेकप से लोगों के बीच खेल दिखलाने में संकोच महसूस करने लगा है। युवागर्व शिक्षा, रोजगार, रोजी-मजदूरी, कृषि करना पंसद कर रहे है। इस कारण से वर्तमान समय में "नट" जाति समूह अपने मूल खेल-तमाशा, करतब को बिसराते (भूलने) लगा है। इस तथ्य को देखते हुये "नट" जाति समूह को नृजातिवृतांतात्मक अध्ययन के लिए चुना गया है।

अध्ययन के उददेश्य:- प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के घुमंतू जाति समूह "नट" पर आधारित लेख है। जिसका प्रमुख उददेश्य नीचे निम्न प्रकार से प्रस्तुत है-

(1) "नट" जाति समूह के खेल-तमाशा, करतब पर आधुनिकता/पर-संस्कृतिकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

(2) "नट" जाति समूह के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, भाषायी, वस्त्र एवं आभूषण का नृजातिवृतांतात्मक अध्ययन सहः संहिताकरण करना रहा है।

शोध प्रविधि:- प्रस्तुत अध्ययन की विशेषता यह है कि इस अध्ययन में गुणात्मक और वर्णात्मक दोनों प्रकार के शोध प्रविधियों का उपयोग करते हुए सहभागी अवलोकन विधि अपनाया गया है। सहभागी अवलोकन अध्ययन के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर संभाग के नया रायपुर स्थित तान्दुल गांव और बिलासपुर संभाग के जांजगीर-चांपा जिला को चुना गया है। "नट" जाति बहुल गांवों का चयन नृजाति सूचनादाताओं के आधार पर सहभागी अवलोकन अध्ययन के लिए उददेश्यमूलक निदर्शन पद्वति अपनाया गया है। तथ्यों का संकलन के लिए मानववैज्ञानिक टूल्स के रूप में उपयोग होने वाले उपकरणों में जैसे-साक्षात्कार निर्देशिका, साक्षात्कार अनुसूचि, समूहवार्ता, केन्द्रिय समूहवार्ता तथा वयैक्तिक अध्ययन जैसे गुणात्मक शोध उपकरणों के द्वारा "नट" जाति समूह के मुखिया, गांव के पुजारी, गांव के मुखिया, नृजाति पुजारी, पांरपरिक चिकित्सकों, कलाकारों, धार्मिक विशेषज्ञ, वृद्वव्यक्ति महिला, पुरूष जैसे प्रमुख कुर्जी सूचनादाताओं का गहन साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन प्रत्यक्ष रूप से अध्ययनकर्ता के द्वारा किया गया है।

परिणाम, विवेचना एवं नृजाति सम्बन्धी मिथक:- "नट" शब्द का अर्थ जो वर्तमान समय तक हुये अध्ययनों से पता चलता हैं कि "नट" शब्द संस्कृत से लिया गया है। जिसका अर्थ नृत्य, नाटक अथवा अभिनय करने से है। Wikipedia (2023)[9] "संस्कृत में "नट" शब्द का अर्थ नर्तक के रूप में होता है और "नट" पारंपरिक रूप से मनोरंजन करने वाला बाजीगर थे।" Hindi2dictionary (2023)[10] के अनुसार "नाटक करने या खेलने वाला व्यक्ति को "नट", बाजीगर कहते है।" Educalingo (2023)[11] के अनुसार "एक जाति जो प्रायः गा-बजाकर, खेल-तमाशा करके या कुश्ती-कलाबाजी दिखाकर जीवन निर्वाह करती है उसे "नट", बाजीगर, करतब बाज कहते है।" Shabdkosh (2023)[12] के अनुसार "एक जाति जो

कलाबाजी दिखाकर अपनी आजीविका चलाती है।" Talib (2019)[13] के अनुसार "नट" जाति का प्रमुख कार्य नृत्य, नाटक (अभिनय) करतब, खेल-तमाशा करना है।" तथा Russell and Hira Lal (1916)[14] ने बादी, डांगचगहा, बाजीगर, जिप्सी जाति-जनजाति शब्दों के आधार पर रस्सी के ऊपर चलने वाले जाति समूहों के लिए "नट", डांगचगहा, कलाबाजी शब्दों का प्रयोग किया है।" इत्यादि अध्ययनों से पता चलता है कि "नट" शब्द जो न+ट दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ नृत्य, नाटक, कलाबाजी, करतब अथवा अभिनय करना है। किन्तु नवीन वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि "नट" शब्द जो दो शब्दों न+ट से मिलकर बना है। उनका वास्ताविक अर्थ को देखे तो न+ट जिसमें "न" शब्द का अर्थ नृत्य, नाटक, अभिनय तथा कलाबाजी से है। और "ट" शब्द का अर्थ तटस्थ, निडर, तत्पर या तत्परता से है। अर्थात नृत्य तटस्थ या निडर हो कर करतब, कलाबाजी का कार्य करने से है। Bhaskar (2022)[15], Rajasthangyan (2023)[16], Dakshinkosaltoday (2023)[17] तथा "नट" जाति समूह द्वारा बताये गये किंवदंती तथ्यों के आधार पर इनका "नट" (डंगचगहा) नामकरण दूसरे अन्य समाजों के द्वारा दिया गया है। इनके अनुसार ऐ बताते हैं कि आज से लगभग 400 पूर्व या 12वीं शताब्दी ईस्वी में यदुवंशी राजा तिमनपाल राजस्थान करौली तिमनगढ़ पर राज करते थे। उस समय तिमनपाल राजा ने अपने क्षेत्र में करतब दिखाने वाले समूहों का चर्चा बहुत सुन रखा था। तो राजा ने अपने राज्य में करतब दिखाने वालों के समूहों को करतब दिखाने के लिए आमंत्रित किया। करतब दिखाने वाला समूह राजा का आमंत्रण पा कर करतब-बाज करतब दिखाने के लिए राजमहल आये। राजमहल आये हुये करतब बाजों को शर्त के अनुसार कहाँ गया की जो भी करतब-बाज "नट" "नटनी" स्वर्णगिरी मंहल से मंहल के दूसरे ओर पहाड़ के चोटी को रस्सी के सहारे चलते हुये जो भी पार करेगा उसे वह राज्य का आधा हिस्सा ईनाम के रूप में देगे। इस शर्त के अनुसार क्षेत्र में प्रसिद्ध एक "नट" और "नटनी" खेल दिखाने के लिए तैयार हो जाता है। वह खेल (रस्सी से पार करने के लिए) दिखाने के लिए सुबह मंहल की ओर आकर बाँस के सहारे रस्सी पर "नटनी" चढ़कर चलने लगता है। वह लगभग आधा हिस्सा पार कर दिया रहता है तभी राज्य का आधा हिस्सा को "नटनी" जीत न ले सोचकर रानी और उनके मंत्री मिल कर सिपाहियों से रस्सी को कटवा देते है। रस्सी कटने के कारण "नटनी" का बैलेस (संतुलन) बिगड़ने से वह जमीन पर गिर जाता है। जिससे उनकी मृत्यु हो जाता है। इस दृश्य को देख कर "नट" "नटनी" के वियोग में नगाड़े पर थाप देते-देते प्राण त्याग देता है। वहीं "नट" मरने से पहले राजा-रानी को श्राप देता हैं कि उसका राज्य बर्बाद हो जाये। और कुछ वर्षों बाद वह महल खंडहर में बदल जाता है। इसी के याद में राजस्थान के करौली, अलवर शहर में "नट" "नटनी" का मकबरा बनाया गया है जो आज "नट" "नटनी" किला के नाम से जाना जाता है। इस तरह से निष्कर्ष के रूप में हम देख सकते है कि जो कलाबाजी, खेल-तमाशा, करतब, अभिनय करता है उसे हम विमुक्त घुमंतू/अर्ध-घुमंतू "नट" जाति कहते हैं।

नट जाति की आवास प्रतिमान:- "नट" जाति समूह जो पूर्ण रूप से पहले घुमंतू प्रवृत्ति के थे लेकिन अब वह वर्तमान समय में अर्ध-घुमंतू में आने लगा है। परिणाम स्वरूप "नट" जाति किसी गांव शहर में स्थायी बसने लगा है। स्थायी बसाहट के परिणाम स्वरूप "नट" जाति को भी छत्तीसगढ़ राज्य में गरीबों के विकास के लिए चलाये जा रहे विकासिय योजनाओं में जैसे- इन्दिरा आवास योजना/प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना, आयुष्मान योजना आदि का लाभ मिलने के कारण इनके आवास प्रतिमान पर कुछ सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है किन्तु अभी भी बहुत से "नट" जाति समूह अपने पांरपरिक त्रिपाल के झोपड़ी (घुपड़ी) में अभी भी रहने मजबूर है। इनकी ऐसी मजबूरी इनके गरीबी, अशिक्षा जैसे कारणों के कारण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। गरीबी के कारण कभी-कभी इसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होता। इस स्थिति में वह पक्का मकान की कल्पना भी नहीं कर सकता था लेकिन वर्तमान समय में स्थायी बसाहट के कारण "नट" जाति समूह के कुछ लोग अपने पांरपरिक खेल-तमाशा के साथ-साथ अब रोजी, मजदूरी एवं व्यापार भी करने लगा है। इंदिरा आवास/प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना, मुख्यमंत्री खाद्यान योजना, आयुष्मान योजना, तथा छत्तीसगढ़ शासन द्वारा वर्तमान समय में चलाये जा रहे महतारी वंदन योजना ने इनके घुमंतूपन को एक तरह से स्थायी जीवन में परिवर्तित करने में भी मुख्य योगदान दिया है। प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास का लाभ मिलने के कारण इनके आवास प्रतिमान पक्का होने लगा है। अतः छत्तीसगढ़ राज्य के अन्तर्गत निवासरत् अर्ध-घुमंतू "नट" जाति के आवास प्रतिमान में बदलाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

तालिका क्रं. 01 नट जाति की आवास प्रतिमान

क्रं.	आवास के प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत	उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि "नट" जाति
1	झोपड़ी	04	01.90	समाज में सर्वाधिक अर्ध-पक्का मकान (91)
2	कच्चा मकान	73	34.76	43.33% एवं न्यूनतम झोपड़ी के रूप में (04)
3	पक्का मकान	42	20.00	1.90% पाया गया।
4	अर्ध-पक्का मकान	91	43.33	
	कुल योग	210	100.00	

वस्त्र, आभूषण एवं भौतिक संस्कृति:- छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत अर्ध-घुमंतू जाति समूह "नट" में भौतिक संस्कृतियों में जैसे- घरों में उपयोग होने वाले बर्तन, पहनने का कपड़ा/पोशाक, गहने, आभूषणों में लगभग पूरी तरह से परिवर्तन देखने को मिलेगा। आज से लगभग 40 से 50 वर्ष पूर्व ये घरेलु बतनों के रूप में मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे लेकिन वर्तमान समय में आधुनिक एल्युमिनियम तांबा, पीतल, कांसा, लोहा, स्टील इत्यादि धातुओं से बने बर्तनों का उपयोग करने लगा है। यह अलग बात है कि अभी कुछ "नट" जाति परिवारों में मिट्टी के बर्तनों का उपयोग कुछ खाद्य पदार्थ को रखने या बनाने के लिए अभी कम मात्रा में करते हैं। पोशाक में महिला फटे पुराना सलवार सुट, कुर्ती, साड़ी का उपयोग करते थे लेकिन वर्तमान समय में अब ये अच्छे कपड़ा साड़ी, सलवार सुट, घाघरा चुनरी पहनने लगा है तो वही छोटे एवं अविवाहित

लड़कियाँ पर-संस्कृतिकरण के कारण सलवार सुट, घाघरा चुनरी, जींस, टि-शर्ल्ट, लोवर पहनने लगा है। पुरूषों में मुख्य रूप से पैट, शर्ल्ट, जींस, टि-शर्ल्ट, लोवर इत्यादि पहनने लगा है। गहने एवं आभूषणों में ये पहले कौड़ी के माला और तांबा के बाजूबंद, अंगूठी, चूड़ी, पायल, कानफूल, शेर या भालू दांत के माला, बेनीफूल, खिनवा, बिछिया, साटी, कमरबंध, सुता, डालडा के आभूषण, गोदना, धारण करते थे लेकिन वर्तमान समय में गोदना पूर्ण रूप नहीं के समान देखने को मिलेगा। तथा स्थिति अनुसार "नट" जाति समूह में अब लोग सोना, चांदी के आभूषण पहनने लगा है।

भोजन एवं पेय:- "नट" जाति समूह प्रारम्भ से ही मांस प्रिय समाज रहा है। वह विभिन्न प्रकार के मांस का सेवन करता है। इनके प्रिय मांस में सुवर, बकरा, गोहिया (पाघेर), मुर्गी-मुर्गा, मछली, कंछवा, बतंख इत्यादि के साथ-साथ भोजन में चावल, दाल, रोटी, सब्जी, भांजी खाना पंसद करते है। पहले ये गरीबी में गेहूँ के आटा या दालिया, चावल के पेज बनाकर दोनों समय पीते थे लेकिन वर्तमान समय में यह लुप्त हो गया है और अब वह चावल, रोटी बनाकर खाने लगा है। "नट" जाति समूह में नशा-पान का प्रचलन महिला पुरूष दोनों में अधिक देखने को मिलेगा। क्योंकि इनके प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक एवं परिवारिक कार्यों में शराब का चढ़ावा और उस चढ़ावा का प्रसाद के रूप में सभी लोगों को वितरण करना शामिल है। कुछ "नट" परिवारों में कच्ची मंहुआ शराब बनाकर बेचने का कार्य भी करते है अर्थात बेचना और पीना भी है। दूसरे कारण के रूप में देखे तो दिन भर "नट" जाति समूह खेल-तमाशा, करतब दिखाने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान भटकता रहता है जिससे शरीर थक जाता है तो थकान मिटाने के लिए ये शराब का सहारा लेते है या यू कहे की शराब का सेवन करते है। जिसके कारण से "नट" जाति समूह में नशा का प्रचलन अधिक है।

सामाजिक आर्थिक जीवन:- "नट" जाति समूह की सामाजिक स्थिति अन्य जाति समूहों के अपेक्षा पिछड़ा हुआ है। आधुनिकता के युग में आज भी "नट" जाति समाज में रूढ़ीवादी रीति-रिवाज पंरपपरा का प्रचलन अधिक है। जिसके कारण से "नट" जाति समाज की सामाजिक स्थिति आज भी दूसरे जातियों के अपेक्षा पिछड़ा हुआ देखा जा सकता है। "नट" जाति में समगोत्रों में विवाह का प्रचनल नहीं है। यदि लड़की लड़का सामान गोत्र के हो तो वह भाई बहन कहलाता है। "नट" जाति बहिर्विवाही गोत्रों में बट रहता हैं। इसमें प्रायः एक गोत्र के सदस्य एक ही वंश के होते है, वंश बदलने पर इनके गोत्र के नाम भी बदल जाता है। "नट" जाति में सामाजिक संगठन का निर्माण विभिन्न गोत्रों के सदस्य आपस में मिलकर संगठन का निर्माण करते हैं। "नट" जाति समूह में मुख्य रूप से एकविवाही, बहुपत्नी विवाह, विधवा विवाह, विधुर विवाह, साली विवाह, देवर भाभी विवाह के साथ पितृवंशीय, पितृसतात्मक, संयुक्त एवं एकल परिवार का प्रचलन है। इनमें नातेदारी व्यवस्था एवं परिहार संबंध अन्य जातियों के समान ही पाया जाता है।

तालिका क्रं. 02 सूचनादाता एवं परिवार के मुखिया की शैक्षणिक स्थिति कुप्पुस्वामी स्केल 2019 के अनुसार वितरण

क्रं.	शैक्षणिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत	उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि "नट" जाति समाज में सर्वाधिक 66.2% सूचनादाता अशिक्षित एवं न्यूनतम 33.8% सूचनादाता शिक्षित के रूप में पाया गया।
1	अशिक्षित	139	66.2	
2	शिक्षित	71	33.8	
	कुल योग	210	100.00	

"नट" जाति एक कुशल करतब बाज/खेल-तमाशा प्रशिक्षक के रूप में जाना जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत "नट" जाति का मुख्य व्यवसाय प्रारभ से ही खेल-तमाशा, कलाबाज एवं भिच्छावृत्ति करना रहा है। और इनका आज भी जीविकोपार्जन का मुख्य व्यवसाय करतब, खेल-तमाशा, कलाबाज एवं भिच्छावृत्ति करना है। लेकिन इसमें अन्तर केवल इतना है की ये "नट" जाति प्रारम्भ में खेल-तमाशा के साथ-साथ भिच्छावृत्ति का काम में भी सलिप्त थे लेकिन वर्तमान समय में "नट" जाति के लोग खेल-तमाशा दिखाने का काम मात्र करते हैं। यह अलग बात है की कुछ प्रदेशों में विमुक्त घुमंतू जाति के लोग आज भी भिच्छावृत्ति के काम में सलिप्त है। लेकिन छत्तीसगढ़ राज्य के घुमंतू/अर्ध-घुमंतू जाति "नट" खेल-तमाशा दिखाने का कार्य मात्र कर रहा है। परन्तु भारत सरकार द्वारा छोटे बच्चों से काम लेना कानूनी रूप से बाल अपराध घोषित किया हुआ है जिसके कारण से जब "नट" जाति के लोग खेल-तमाशा दिखाने के लिए अपने छोटे बच्चों को ले जाते है तो पुलिस द्वारा इनको और इनके बच्चों को पकड़ा जाता है और बहुत से छोटे बच्चों को बाल सुधार गृह में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भी भेज दिया जाता है। इस तरह से "नट" जाति जो पूर्ण रूप से खेल-तमाशा पर निर्भर है/रहता है के कारण इनके आर्थिक स्थिति पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। इनके जीविकोपार्जन में सुवर, मुर्गी, बर्तख, बकरी पशु पालन के साथ-साथ गोहिया (पाघेर), मछलियों के शिकार/मारना शामिल है।

तालिका क्रं. 03 "नट" समूह द्वारा संलग्न कार्य के प्रकार एवं परिवारों की आवृत्ति का वितरण

क्रं.	संलग्न कार्य के प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत	उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि "नट" जाति समाज में सर्वाधिक 63.33% सूचनादाता परंपरागत खेल-तमाशा एवं न्यूनतम 05.23% सूचनादाता व्यापार के कार्य में संलग्न पाया गया।
1	परंपरागत खेल-तमाशा	133	63.33	
2	कृषि	45	21.42	
3	मजदूरी	21	10.00	
4	व्यापार	11	05.23	
	कुल योग	210	100.00	

"नट" जाति का राजनीतिक परिवेश सरल एवं स्पष्ट है। छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत "नट" जाति में नृजाति मुखिया का चुनाव पारा/मुहला/बस्ती के आधार पर होता है। जितना पारा/मुहला/बस्ती रहता है उतना ही "नट" जाति समूह में मुखिया (सहाना) रहता है। इनका चुनाव पारा/मुहला/बस्ती/गांव के सभी "नट" जाति समूह के लोग सर्वसम्मति से करते हैं जिसे 'सहाना' कहा जाता है। "नट" जाति में 12 गांव के 1 मुखिया (सहाना) होता है। 12 गांव के जुड़ाव/एकत्र होना को 12 पॉली कहते हैं, इनके सहयोग के लिए 4 (सहाना) और लोगों का चुनाव सर्वसहमति से करते हैं। "नट" जाति समूह में किसी भी प्रकार के सामाजिक, परिवारिक समस्या का निराकरण "नट" नृजाति पंचायत के माध्यम से ही किया

जाता है। बहुत कम ही केस थाना कचहरी तक जाते है ये 12 पॉली मिटिंग (जुड़ाव) के माध्यम से ही करते हैं। 12 पॉली जुड़ाव में लिये गये निर्णय को सर्वसहमति से मानना/स्वीकारना रहता है, नहीं स्वीकारने/मानने पर आर्थिक जुर्माना देना पड़ सकता है। आर्थिक जुर्माना इनके धार्मिक पक्षों पर भी देखने को मिलता है। देवी-देवताओं के मान सम्मान का उलंघन करने पर धार्मिक रूप से बकरा या सुवर या मुर्गा का बलि देकर चुकाना पड़ता है। जाति समूह "नट" की सर्वोच्च सत्ता एवं उनके जीवन के मूल केन्द्र इनके देवी-देवता और उनके नियम कानून क्रियाकलाप ही है। ये पूर्ण रूप से अलौकिक शक्ति पर विश्वास करता है। एक प्रकार से इनहे आत्मावादी कहा जा सकता है क्योंकि इनके अधिकांश देवी-देवता के रंग-रूप, आकार प्रकार नही हैं। "नट" जाति समूह देवी-देवताओं के रूप में अपने मृत (स्वार्गवासी) हुये पूर्वजों को ही मानते है, उनकी पूजा-पाठ करते हैं। ये अपने देवी-देवताओं को सर्वशक्तिमान मानते हैं उन पर अत्यधिक विश्वास करते हैं। इनके प्रमुख देवी-देवताओं में जैसे- दादो बकता, दादो फरसराम, दादो घासी, दादो फिरतु, खडकवाहनी, सटवाई के साथ-साथ हिन्दू देवी-देवताओं में बूड़ीमाता, विष्णु, शंकर, दुर्गा माता, संतोषी माता, लक्ष्मी माता, हनुमान के साथ कुछ लोग ईसाई धर्म के प्रभु यीशु को भी मानते है। "नट" जाति समूह में अशिक्षा अन्धविश्वास अत्यधिक होने के कारण ये छोटे-छोटे पूजा-पाठ में बकरा/सुवर/मुर्गा का बलि में अत्यधिक रूपया पैसा धन दौलत खर्च कर देते है इससे भी इनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर स्पष्ट प्रभाव है।

तालिका क्रं. 04 सूचनादाताओं की व्यवसायवर वार्षिक आय के स्रोत का वितरण

क्रं.	संलग्न कार्य के प्रकार	वार्षिक आय रुपया में	आय का प्रतिशत	उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि "नट" परिवारों की सर्वाधिक आय खेल-तमाशा,करतब 57.37% एवं कृषि कार्य 19.67% से हैं तो न्यूनतम आय रोजी-मजदूरी 09.89% से पाया गया।
1	खेल-तमाशा/करतब	35,000	57.37	
2	कृषि	12,000	19.67	
3	रोजी-मजदूरी	6,000	9.89	
4	व्यापार एवं अन्य	8,000	13.11	
	कुल योग	61,000	100.00	

भाषा एवं बोली:- छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत "नट" जाति जिस भाषा-बोली का प्रयोग करते हैं उसे 'गुजराती' कहते हैं जिसका अर्थ होता है "नट" गुजराती की भाषा' से है। इनके अनुसार 'गु' का अर्थ 'गुड जैसे मिठा या गुजारा/भ्रमण' से तथा 'जराती' का अर्थ 'एक भूमि से दूसरे भूमि को भ्रमण करना' से है। अर्थात् "नट" जाति के लोग अपने भाषा-बोली को गुड के जैसा मिठा मानते/कहते है। दूसरे शब्दों में देखे तो "नट" जाति के लोग खेल-तमाशा के संदर्भ में जन्म लेने के साथ ही एक स्थान से दूसरे स्थान अपने माता-पिता परिवार के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान को भ्रमण/विचरण/भटकते या भटकने से है। ये अपने आप को राजपूतों के परिवारों से संबंधित मानते है। "नट" जाति समूह के भाषा-बोली का प्रयोग इनके आस-पास रहने वाले अन्य जाति-जनजाति के लोग भी कुछ मात्राओं में कुछ शब्दों का प्रयोग इनके साथ बातचीत करने में भी कभी कभार करते है। "नट" जाति समूह अपने भाषा-बोली को गुजराती भाषा से संबन्धित बताता हैं लेकिन गुजराती भाषा इनके बोली से भिन्न प्रदशित होता है, परंतु गुजराती भाषा से संबन्धित तथ्य अभी भी अनभिज्ञ है। लेकिन कुछ शब्द मिलती-जुलती भी है। इस संदर्भ में भाषा वैज्ञानिकों को कम करने की जरूरत है। "नट" जाति समूह छत्तीसगढ़ राज्य में लम्बे समय (पीढ़ियों) से रहने के कारण से इनके भाषा-बोली में छत्तीसगढ़ही भाषा/बोली का मिश्रण/मिक्सप देखा जा सकता है।

तालिका क्रं. 05 भाषा एवं बोली की प्रवृत्ति

क्रं.	हिन्दी	इंग्लिश	नट भाषा-बोली	गुजराती भाषा-बोली
1	माता	Mother	या	माता/मा
2	पिता	Father	बाप	बाप
3	चाचा	Uncle	काको	काका
4	चाची	Aunt	काकी	काकी
5	पति	Husband	माटी/वर	वर
6	पत्नी	Wife	बीयर/बायडी	बायडी
7	बड़े भैया	Eider brother	मोटो भाई	मोटो भाई
8	भाभी	Sister-in-law	भोदई	भाभी
9	बहन	Sister	बेहेन	बेन
10	देवर	Brother-in-law	दियर	दियर

खेल-तमाशा (कला):- "नट" जाति समूह की परम्परागत कार्य खेल-तमाशा, करतब दिखाना रहा है। "नट" जाति समूह जोंकि पूर्व में पूर्ण रूप से घुमंतू प्रवृत्ति के थे जिस कारण से इनमें नृत्य, गीत, संगीत जैसे लोककला का विकास देखने को मिलता है। लेकिन खेल-तमाशा इनके परम्परागत खेल-तमाशा है जो पीढ़ीदर-पीढ़ी अपने पूर्वाजों से ग्रहण कर आज तक दिखाते/करते आ रहे है। "नट" जाति समूह घुमंतू प्रवृत्ति होने के कारण ये दूसरे जाति-जनजातियों की नृत्य, गीत, संगीत जैसे लोककलाओं को देखकर उसे अपनाने (ग्रहण या अंगीकृत करने) लगा और उसे अपने भाषा/बोली में परिवर्तन कर अपने खेल-तमाशा, करतब के दौरान प्रस्तुत करते हैं। लेकिन वर्तमान समय में युवावर्ग औधोगिक तकनीकी वस्तुओं का उपयोग अधिक करने के कारण वह आलस्य और काम को टालने वाला हो गया है। वह दूसरे जाति-जनजाति की गीत, संगीत को अपने भाषा/बोली में अनुवाद/परिवर्तन नहीं कर रहे है उसे उसी ही भाषा/बोली में अपने खेल-तमाशा, करतब के दौरान प्रस्तुत करने लगा है। छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत "नट" जाति के युवावर्ग वर्तमान समय में बहुत से लोग अपने मूल भाषा/बोली को भूलने लगा है या यू कहे की कुछ लोग लगभग भूल चूके है। "नट" जाति के लोग वर्तमान समय में हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, गुजराती, पंजाबी भाषा/बोली के गीत संगीत में खेल-तमाशा, करतब दिखाने के साथ-साथ अपने घरों में या सामाजिक उत्सव में गीत, संगीत लगाकर नृत्य, नाच-गान करते हुये उत्सव मनाते देखा जा सकता है। "नट" जाति समूह के लोग खेल-तमाशा के दौरान आधुनिक और मौलिक वाद्य-यंत्रों का उपयोग करते हैं, मौलिक वाद्य-यंत्र जिसे पांघेर (गोहिया) या बकरा या जानवर (गाय, भैस) या बंदर के खाल से बनाया जाता था। बनाने वालो को "साहना" या "गुरू" या "बैंगा" कहा जाता है जो विशेष पूजा-पाठ कर मौलिक वाद्य-यंत्र का निर्माण करता था। लेकिन वर्तमान समय में कोई भी "नट" जाति के सदस्य मौलिक वाद्य-यंत्र का निर्माण नहीं करते हैं। वह आधुनिक

बना बनाया "रेडिमेन्ट" वाद्य-यंत्र लाऊड स्पीकर बॉक्स का उपयोग करने लगा है।

चित्र :- खेल-तमाशा/करतब दिखाते हुए "नट" बच्ची एवं खेल-तमाशा का प्रशिक्षण देते हुए परिवार का मुखिया

वर्तमान समय में "नट" जाति समूह के लोग जो खेल-तमाशा, करतब दिखाने वाले लोग मुख्य रूप से दो बाँस के बीच रस्सी बाँधकर खाली पैर रस्सी पर हाथ में 5-6 फिट बाँस या डण्डा लेकर चलना, सायकल रिंग से रस्सी पर चलना, सायकल के रिंग में आग लगा कर सिर में रिंग को गोल घुमाते हुये चलना, रस्सी पर सो जाना, रस्सी पर खाली पैर रस्सी को आगे-पीछे जोर से हिलाना, रस्सी पर आग लगा कर गोला चलाना, रससी पर चप्पल पहन कर चलना, रस्सी पर आगे-पीछे चलना, पैर पर थाली लगा कर रस्सी पर चलना, चश्मा पहन कर रस्सी पर चलना, सिर में 5-10 लोटा लेकर रस्सी पर चलना, दोनों घुटना पर थाली लगाकर रस्सी पर चलना, खेल के जगह जमीन पर आगे-पीछे सीधा-उल्टा पलटना, जीफ के सहारे जमीन पर पड़े सुई को उल्टा होकर उठाना, सीने पर बड़ा से पत्थर रखकर घन के माध्यम से फोड़ना, 5-6 फिट के लम्बे छड़ (रिंग) को गल्ले के माध्यम से मोड़ना, ताश के पत्ते पर हाथ की सफाई दिखाना, गीत-संगीत पर ढ़ोल बजाते हुये डांस करना इत्यादि प्रकार के खेल-तमाशा, करतब "नट" जाति समूह द्वारा किया/दिखाया जाता है। जोशी (2022)[18] "नट" जाति समूह के युवाओं में वर्तमान समय में खेले जाने वाले खेलों में प्रमुख रूप से क्रिकेट, कबड्डी, खोखो, फूटबाल, गिलीढ़ढा, भैवरा, पांसा, ताशपत्ती, बांटी इत्यादि खेल है।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता:- "नट" जाति समूह की स्वास्थ्य स्थिति दूसरे जातियों के अपेक्षा कमतर की स्थिति में हैं। महिलाओं में कुछ हद तक कुपोषण देखने को मिला है क्योंकि इनमें कम आयु (18 वर्ष से कम) में ही शादी हो जाना या यूं कहें की वर्तमान समय में भी कुछ यह प्रचलन विद्यमान है। कम आयु में शादी होना तथा कम आयु में ही गर्भधारण वह बच्चे का जन्म देने के कारण महिलाओं में कुपोषण, शिशु मृत्यु दर दूसरे जातियों के अपेक्षा अधिक देखने को मिला। नई पीढ़ी की तुलना में पुरानी पीढ़ी में कुपोषण की स्थिति कुछ देखने को मिलता है क्योंकि नई पीढ़ी के सामने भोजन, भुखमरी की समस्या बहुत हद तक नहीं के समान है लोगों के पास रोजगार आने के कारण आमदानी में वृद्धि हुआ है। दूसरा की "नट" जाति समूह में मांस प्रिय भोजन होने के कारण युवावर्ग में कुपोषण कम देखा जा सकता है। "नट" जाति समूह में आज भी कुछ "नट" पुजारी, बैंगाओं को जड़ी-बुटी औषधीय जंगली पेड़-पौधों का अच्छा ज्ञान है वह पहले विभिन्न प्रकार के बिमारियों का उपचार स्थानीय उपचार पद्धति एवं झाड़ फूक के माध्यम से करवाते है जब ठिक नहीं होते तो सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र या प्रार्वेट डॉक्टर के पास जाते है।

स्वच्छता के मामलों में "नट" जाति समूह अभी भी पिछड़े हुआ है। इनके घरों में सफाई दूसरे जातियों के अपेक्षा नहीं देखने को मिलेगा। छोटे से घरों में सदस्यों की संख्या अधिक तथा उसी घर पर ही मुर्गी-मुर्गा, बतख, बकरी इत्यादि रहने के कारण अस्वच्छता देखा जा सकता है। "नट" जाति समूह में आज भी बहुत से लोग खुले में शौच करते हैं। शौच के बाद लगभग 30 प्रतिशत लोग ही अपने हाथों को साबुन से धोते है जबकि 70 प्रतिशत लोग शौच के बाद साबुन से हाथ नहीं धोते हैं। पहने जाने वाले कपड़ो को चार से पांच दिनों में साफ करते हैं। खाने के सब्जियों को कुछ लोग पानी से धोकर बनाते हैं तो कुछ लोग बिना धोए भी बनाते हैं। अतः स्वच्छता के मामलों में "नट" जाति समूह अभी भी दूसरे जातियों के अपेक्षा पिछड़ा हुआ है।

तालिका क्रं. 06 सूचनादाताओं में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की प्रवृत्ति

क्रं.	स्वास्थ्य की प्रवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत	स्वच्छता की प्रवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत
1	अस्वास्थ्य	147	70	अस्वच्छता	169	80.47
2	स्वास्थ्य	63	30	स्वच्छता	41	19.52
कुल योग		210	100.00	कुल योग	210	100.00

उपर्युक्त तालिका क्रं. 06 से स्पष्ट होता है कि "नट" परिवारों में सर्वाधिक अस्वास्थ्य 70% एवं स्वच्छता की प्रवृत्ति को देखे तो सर्वाधिक अस्वच्छता 80.47% पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की स्थिति में "नट" समाज अभी भी न्यूनतम स्थिति में है।

विकास की स्थिति:- "नट" जाति समूह आज तथाकथित विकास की ओर पूर्व समय के अपेक्षा वर्तमान समय में विकास की ओर धीमी गति से अग्रसित हो रहा है। लेकिन अभी भी दूसरे जातियों के अपेक्षा "नट" जाति में विकास बहुत कम ही देखने को मिलेगा। क्योंकि "नट" जाति समूह एक अर्ध-घुमंतू जाति है और वह वर्ष में लगभग 6-8 माह दूसरे प्रदेशों में खेल-तमाशा, करतब दिखाने के लिए घुमते/भ्रमण करते रहते हैं। घुमंतू प्रवृत्ति के कारण आज भी "नट" जाति समूह में शिक्षा, कृषि, रोजगार की स्थिति दयनीय स्थिति में है। जिस समाज की शिक्षा एवं रोजगार की स्थिति कमजोर रहे वह समाज वर्तमान समय में कैसे विकास का सकता है। "नट" जाति समूह में विकास के लिए पहले शिक्षा पर जोर देने की जरूरत है। "नट" जाति समूहों के बसाहटों में जीवन जीने के लिए जो मूलभूत सुविधा इक्कीसवीं सदीं के संदर्भ में चाहिए वह सुविधा नहीं के सामान दिखाई देता हैं। "नट" जाति समूहों के मकान एवं झोपड़ियाँ टूटी-फूटी, कच्ची दिवारों पर अनगिनत छेद, कच्ची गलियाँ, खाना बनाने के लिए अधिकांश रूप से लकड़ी का उपयोग करते हुये देखा जा सकता है। तो वही वर्तमान समय में कुछ "नट" परिवारों में सरकार द्वारा वितरण किये गये गैस सिलेन्डर का उपयोग भी देखने को मिला है। जो कुछ हद तक विकास को भी दर्शाता है।

निष्कर्ष एवं परिणाम:- "नट" जाति समूह वर्तमान समय में सांस्कृतिक संक्रमण की दौर से गुजर रहा है। "नट" जाति अपने संस्कृति के मौलिक पक्षों को भूलने (बिसराने) लगा है या यू कहें की भूलते जा रहे हैं। "नट" जाति समूह संसाधनों के अभाव में गरीबी तथा जहालत की जिंदगी जी रहे हैं। प्राचीन खेल में जैसे बंदर, भालू का उपयोग करतब, खेल दिखाने के लिए करते थे वही हाथ की सफाई, जादूगरी, ताबीज जड़ी-बूटी बेचने का कार्य करते थे वह पूर्ण रूप से विलुप्त/धूमिल हो चुका है। उनके स्थान पर अब प्राचीन खेल-तमाशा, करतब में बदलाव कर नवीन रूप में आधुनिक वाद्य-यंत्र का उपयोग करते हुये खेल-तमाशा, करतब दिखाने लगा है। वर्तमान समय में जो "नट" जाति समूह स्थायी बसा हुआ है उनके यहा झोपड़ी, त्रिपाल की तम्बू बहुत कम ही देखने को मिलेगा क्योंकि सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर पक्का आवास या अर्धपक्का आवास बनाने लगा है। "नट" जाति अपने पारंपरिक मौलिक संस्कृति खेल-तमाशा, रीति-रिवाज, परम्पराओं में बदलाव कर रहे है और यह बदलाव आधुनिकता के प्रभाव के कारण अपने मूल परम्परा रीति-रिवाज, खेल-तमाशा को बिसराते (भूलते) जा रहे हैं। अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक रूढ़ीवादी विचारधारा तथा सरकार का इनके प्रति अनदेखा करने के कारण आज भी अर्ध-घुमंतू जाति "नट" सरकारी योजनाओं सुविधाओं के अभाव में गरीबी और जहालत/घुमंतू की जिन्दगी जीने को विवश है। "नट" जाति समूह में सामाजिक संगठन 12 पाली पंचायत (जुड़ाव) का प्रचलन है। जिसमें सामाजिक नियम कानून का निर्माण किया जाता है और समाज पर लागू करते हैं। जिसे सभी पालन करते हैं। "नट" जाति समूह वर्तमान समय में हिन्दू देवी-देवताओं के साथ-साथ ईसाई धर्म की भी पूजा-पाठ को अपना सम्मान का विषय मानते हैं। हाँलाकि इस धर्म के लोग इनके साथ-साथ आज भी कहीं न कहीं अस्पृश्यता जैसा व्यवहार करते हैं। इनके हाथो से दिया हुआ खाना को खाना पसंद नही करते। इन्हें आज भी आपराधिक, अशुद्ध जाति के रूप में देखता है। इसी के परिणाम स्वरूप "नट" जाति समूह आज भी मुख्य गाँव/शहर से दूर अपना डेरा (निवास) बनाते/लगाते हैं। वर्तमान अध्ययन से जो भी तथ्य प्राप्त हुआ हैं उससे पता चलता है कि "नट" जाति समूह के संस्कृतियों पर बाह्य/बाहरी राजनीतिक एवं सामाजिक संस्कृति हावी हो रहा हैं। जिस कारण से "नट" जाति समूह में तीव्र सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ-साथ पर-संस्कृतिकरण की दौर भी चल रहा है। समय रहते पर इन पर अंकुश नहीं लगता है तो संस्कृतिक का विघटन होने की खतरा महसूस हो रहा है। सांस्कृतिक विघटन होता है तो लोगों में सरकार व लोगों के प्रति असंतोष फैलता है। परिणाम रूपरूप विमुक्त घुमंतू-अर्ध-घुमंतू जातियों पर इसका स्पष्ट प्रभाव पडेगा और लोगों के हाथों से रोजगार जायेगा तो लोगों में अपराध का प्रसार होगा। अतः सरकार को चाहिए की इनके विकास के साथ-साथ इनके संस्कृति का भी संरक्षण करें।

संदर्भ-सूची:-

(1)MOSJE.2017.Ministry of Social Justice & Empowerment Government of India.*National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes*.socialjustice.nic.in June 30, 2008.http://socialjustice.nic.in/writereaddata/ UploadFile/ NCDNST2008-v1%20(1).pdf (accessed september 18, 2019).

(2)The Gazette of India.Ministry of Home Affairs. Socialjustice.nic.in.October 29.1956. http://socialjustice.nic.in/writereaddata/UploadFile/SC%20ST%20LISTS%20(MODIFICATION)%20ORDER%201956.pdf .(accessed september 12, 2018).

(3) नट, अमृतलाल.(2014). छत्तीसगढ़ की घुमंतू जातियाँ. रायपुर: सामाजिक जनगणना.

(4) Census of India.Ministry of Home Affairs, *Government of India. office of the Registrar General&Census Commissioner, India*.2011.censusindia.gov.in. http://censusindia.gov.in /(accessed september 20, 2019).

(5) NCDNST.2008.*National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes*.socialjustice.nic.inJune30,2008.http://socialjustice.nic.in/writereaddata/UploadFile/NCDNST2008-v1%20(1).pdf (accessed september 18, 2019).

(6) नट, सुरेश कुमार. (2021). अंजोर एक आत्मकथा. मुगेली: बिहारी प्रिंटर्स मुगेली छ.ग. प्रथम संस्करण.

(7) Census of India.Ministry of Home Affairs, *Government of India. office of the Registrar General&Census Commissioner, India*.2011.censusindia.gov.in. http://censusindia.gov.in /(accessed september 20, 2019).

(8) NCDNST.2008.*National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes*.socialjustice.nic.inJune30,2008.http://socialjustice.nic.in/writereaddata/UploadFile/NCDNST2008-v1%20(1).pdf (accessed september 18, 2019).

(9) https://en.wikipedia.org/wiki/Nat_(caste),29/06/2023.7:51AM.

(10)https://www.hindi2dictionary.com/%E0%A4%A8%E0%A4%9F-meaning-hindi.html, 29/06/2023.8:11AM.

(11)https://educalingo.com/hi/dichi/nata,29/06/2023.8:50AM.

(12)https://www.shabdkosh.com/hi/dictionary/hindienglish/%E0%A4%A8%E0%A4%9F/%E0%A4% A8%E0%A4%9F-meaning-in-english,29/06/2023

(13) Talib, Md. (2019). नट समुदाय की स्थितिः एक समाजिक केस अध्ययन. Ignited Minds Journals : Volume 16. Issue: 6 PN.2360 – 2366.

(14) Russell, R. V, and Hira Lal. (1916). *The Tribes and Castes of The Central Provinces of Indai.* Vol. IV. London: Macmillan and Co., Limited St..

(15)https://www.bsarkari.com/%E0%A4%A8%E0%A4%9F-%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4% A4%E0-%A4%BF-meaning-eng-159511,29/06/2023.8:45AM.

(16) https://www.rajasthangyan.com/rajasthan?nid=46,29-/06/2023.8:59AM.

(17)https://dakshinkosaltoday.com/nomadic-tribe-of-chhattisgarh-nut/,29/06/2023.8:04AM.

(18) जोशी, हेमन्त कुमार. (2022). घुमंतू जनजातियाँ समाज का उपेक्षित वर्ग. जोधपुर: राजस्थानी ग्रन्थगार. पृ.क्र. 149-156.